Rs. 5/-

nbt.india
एकः सूते सकलम्

# Readers' Club Bulletin
# पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 12, December 2013

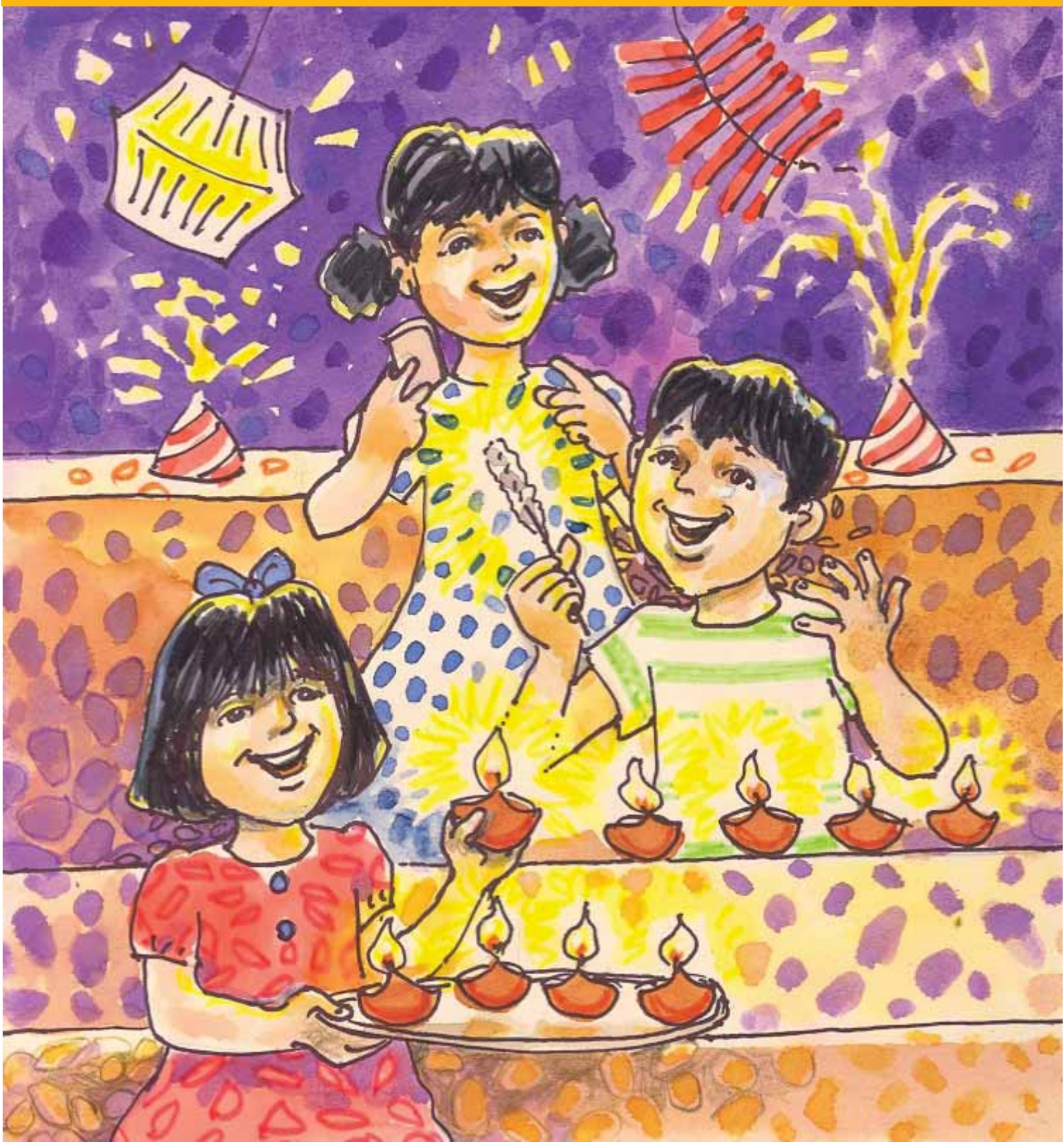

nbt.india
एकः सूते सकलम्

# Readers' Club Bulletin
## पाठक मंच बुलेटिन

**Vol. 18, No. 12, December 2013** **वर्ष 18, अंक 12, दिसम्बर 2013**

**Editor / संपादक**
**Manas Ranjan Mahapatra**
**मानस रंजन महापात्र**

**Assistant Editors / सहायक संपादकगण**
**Deepak Kumar Gupta**
**दीपक कुमार गुप्ता**

**Surekha Sachdeva**
**सुरेखा सचदेव**

**Production Officer / उत्पादन अधिकारी**
**Narender Kumar**
**नरेन्द्र कुमार**

**Illustrator / चित्रकार**
**Neeta Gangopadhyay**
**नीता गंगोपाध्याय**

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

*Printed* at Pushpak Press Pvt, Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, New Delhi.

*Typeset* at Nath Graphics, 1/21, Sarvapriya Vihar, New Delhi-110016

## Contents/सूची

| | | |
|---|---|---|
| *बाल साहित्य के पुरोधा हरिकृष्ण...* | | 1 |
| *चिट्ठी आई है...* | | 2 |
| सात समुंदर | डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी | 3 |
| Peacock Plumes | Mayakshi Chattopadhyaya | 6 |
| हम बच्चे हरदम तैयार | अब्दुल मलिक ख़ान | 9 |
| Bipin Master's Ghost | Sumit Talukdar | 10 |
| एक मिनट का चक्कर | सरोजनी प्रसाद | 14 |
| *A Lively Interaction* | | 16 |
| *Festival of Reading...* | | 17 |
| The Good News | Avril Dsouza | 18 |
| दो कविताएँ | कलीम आनंद | 20 |
| गिरगिट ने रंग बदला | डॉ. मोहम्मद साजिद ख़ान | 21 |
| धूप | विजय बजाज | 23 |
| Foolishness | Srihari Nayak | 24 |
| Smile | Jigyasa Kharbanda | 25 |
| सफरनामा दीपक का | राजकुमार जैन | 26 |
| टॉमी को मिला घर | संदीप कपूर | 29 |
| Unreliable Gadgets | Cadet Animesh Chugh | 31 |
| पहले ही हाजिर है... | आइवर यूशिएल | 32 |

***Editorial Address/*** **संपादकीय पता**
National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 5.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचो को नि:जुल्क वितरित किया जाता है।

# बाल साहित्य के पुरोधा हरिकृष्ण देवसरे नहीं रहे

बाल साहित्य के अग्रणी साहित्यकार डॉ. हरिकृष्ण देवसरे का निधन 14 नवंबर, 2013 को हो गया। वे 75 वर्ष के थे। वे राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के साथ लगभग दो दशक से भी अधिक समय से जुड़े थे। 'पाठक मंच बुलेटिन' में उनकी रचनाएँ अकसर प्रकाशित होती रही हैं ।

डॉ. देवसरे ने अपने विपुल बाल साहित्य लेखन के द्वारा बाल साहित्य की दुनिया को विस्तार दिया। उनकी लेखनी का विस्तार कथा, उपन्यास से लेकर नाटक एवं विज्ञान–कथा और अनुवाद कार्य तक था। देवसरे जी ने लेखन की अनेक विद्याओं को समभद्ध किया, लेकिन विज्ञान–कथा लेखन में उनका अद्वितीय योगदान रहा। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित उनकी पुस्तक 'घना जंगल डॉट कॉम' काफी चर्चित और लोकप्रिय हुई और उसका अनुवाद अंग्रेजी व कई अन्य भारतीय भाषाओं में हुआ। न्यास से उनकी अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं। लगभग तीन दशक पहले नेशनल बुक ट्रस्ट से बच्चों के लिए नाटक की पुस्तक 'हमारा नाटक' का संकलन तैयार किया। इसके अलावा प्रख्यात कहानीकार प्रेमचंद की चुनिंदा बाल कहानियों का संकलन भी तैयार किया। डॉ. देवसरे के जीवन काल की अंतिम पुस्तक 'हरिकृष्ण देवसरे की

चुनिंदा बाल कहानियां' का प्रकाशन हाल ही में ट्रस्ट ने किया था।

डॉ. देवसरे ने मात्र 23 वर्ष की आयु में 'आकाशवाणी' में काम करना शुरू कर दिया था। बाल साहित्य के प्रति उनका समर्पण ही था कि उन्होंने आकाशवाणी की नौकरी छोड़कर बाल पत्रिका 'पराग' के संपादक का कार्य किया। उन्हें देश में बाल साहित्य पर पहली पी.एच.डी. पाने का भी सम्मान मिला हुआ है। इसके अलावा, वे 'विज्ञान प्रसार' के सलाहकार भी रहे। बाल साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए साहित्य अकादेमी ने वर्ष 2011 में बाल साहित्य पुरस्कार और उससे पहले पद्मा बिनानी ट्रस्ट ने पहला वात्सल्य सम्मान से, उन्हें सम्मानित किया।

डॉ. देवसरे के निधन से बाल साहित्य को जो क्षति हुई, उसकी भरपाई होना सम्भव नहीं है। न्यास–परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि!

## चिट्ठी आई है...

*पाठक मंच बुलेटिन* का मैं नियमित पाठक हूँ और इसका मैं तरतीब से संकलन कर रहा हूँ। बुलेटिन रोचक और ज्ञानवर्धक है। धारावाहिक प्रकाशन का क्रम कृपया बनाए रखें। इस क्रम से पाठकों को बुलेटिन का बेसब्री से इंतजार रहता है। सितंबर अंक में प्रकाशित 'इन्टेरेस्टिंग फैक्ट्स अबाउट सेप्टेंबर' उपयोगी संकलन है। कृपया इसकी माहवार निरंतरता बनाए रखें। राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा आयोजित गतिविधियों की रिपोर्ट पढ़कर न्यास की बाल गतिविधियों की जानकारी मिलती रहती है ।

*चिन्मय दत्ता*
*पोस्ट बॉक्स नं-19,*
*चाईबासा-893201*
*प. सिंहभूम, झारखंड*

मैं हरियाणा में लेक्चरर हूँ। हिंदी साहित्य में मेरी विशेष रुचि है। मैं *पाठक मंच बुलेटिन* का वार्षिक सदस्य बनना चाहता हूँ, ताकि पत्रिका मुझे नियमित मिलती रहे। कृपया पत्रिका की कोई प्रति भेजें तथा सदस्यता के नियम भी बताएँ।

*सतीश भारद्वाज*
*गली नं. 7, शांति नगर*
*निकट, नरकातारी रोड*
*कुरूक्षेत्र-136119 (हरियाणा)*

('बुलेटिन' की सदस्यता के संबंध में कृपया पत्रिका के द्वितीय कवर पृष्ठ का अवलोकन करें। –संपा.)

पाठक मंच बुलेटिन बच्चों की प्रिय पत्रिका है। पत्रिका का इंतजार रहता है।

बानो सरताज, आकाशवाणी के सामने
सिविल लाइंस, चंद्रपुर-442401, महाराष्ट्र

पहली ही बार *पाठक मंच बुलेटिन* का कोई अंक (अक्तूबर 2013) देखने को मिला। न्यास से बच्चों के लिए कोई पत्रिका भी निकलती है यह पहली बार जाना। पहली ही नजर में पत्रिका ने मन मोह लिया। पत्रिका के कवर से लेकर सामग्री और प्रस्तुति तक सब कुछ उत्कृष्ट और मनमोहक लगा। पत्रिका के माध्यम से बाल साहित्य की गतिविधियों की भी जानकारी मिली।

अलका सिन्हा, 371, गुरु अपार्टमेंट्स,
प्लॉट नं.-2, सेक्टर-6, द्वारका, नई दिल्ली-110075

**खेद :** 'बुलेटिन' के नवंबर 2013 अंक में तकनीकी गड़बड़ी से तालव्य 'श' बदलकर मूर्धन्य 'ष' बन गया। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है।
–संपादक

धारावाहिक उपन्यास
भाग : 9

# सात समुंदर

## सूख गया अथाह सागर!

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

नारायणन की पोती गायत्री तैराकी में फर्स्ट आई। पुरस्कार लेकर जब दोनों, दादा-पोती, घर चलने को तैयार हुए तभी किसी ने नारायणन को प्रणाम कर अपना परिचय इस तैराकी प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में दिया और बताया कि वह उनका छात्र रहा था। उस व्यक्ति (निर्णायक) ने नारायणन से उनकी पोती का हाथ माँगा। इस भाग में कुछ और नई बातें...

*(जो विश्वास करते हैं और सत्कर्म करते हैं, उनके स्वागत के लिए फिरदौस (स्वर्ग) का बाग खुला रहेगा। क्वाला आलाम आकुल लाकुम-कुरान)*

सूर्यास्त हो गया। आकाश की लाली ने काले घूँघट में मुँह छुपा लिया।

धीरे-धीरे अजान खत्म हो गई। शाम की नमाज अदा कर ली गई। मगरिब की नमाज।

हासनकुट्टि आहिस्ते-आहिस्ते उठकर बाहर आ गया। चारों ओर सूखी मछलियों की महक तैर रही थी।

''चाय पिओगे?'' कुंजपातुम्मा ने पूछा।

हासनकुट्टि ने धीरे-धीरे हामी भरी। उसने चारों ओर देखा। मछली का जाल एक किनारे पड़ा है। कितने दिन हो गए वह मछली पकड़ने गया ही नहीं। या अल्लाह, इस बीमारी ने तो उसे कहीं का न रख छोड़ा! पता नहीं कुंजपातुम्मा घर का खर्च कैसे चलाती है! एक लड़का है, पारीकुट्टि-वह बेचारा क्या-क्या देखेगा? एक पहिये से तो गाड़ी नहीं चलती है, तो एक आदमी के रोजगार से घर-परिवार कैसे चले?

कुंजपातुम्मा चाय लेकर उसके पास बैठ गई। हासनकुट्टि सोच रहा था, कैसे-कैसे उसकी तबीयत बिगड़ती गई। शुरू-शुरू में खाँसी आती थी। फिर गले में दर्द शुरू हुआ। इधर-उधर की दवा भी हुई। अलेप्पी जाकर दिखाया गया। कहीं कुछ पता न चला। रोग ठीक होने का नाम ही नहीं लेता। नाव में बैठकर वह दूसरे मछुआरों को आवाज भी नहीं लगा सकता था। धीरे-धीरे गला भी बैठता गया।

आखिर हारकर पारीकुट्टि उसे कोच्चि ले गया। तब उसे पता चला उसे कौन-सा भयंकर रोग हो गया है।

डॉ. करुणाकरण ने उसे ढाढ़स बँधाते हुए कहा, ''बाबा, घबड़ाओ मत। बिजली की सेंक लो। धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा।''

हासनकुट्टि ने भी धीरे-धीरे सब कुछ मान ही लिया था। पता नहीं अल्लाह उसे किस बात की सजा दे रहे हैं! महीने में दो बार हरिपद्म से कोचीन जाना-आना। वहाँ एक-दो दिन रहना। खर्चा भी तो कम नहीं है!

तिस पर अगर ऐसी बात हो जाए तो मरीज बेचारे क्या करें? इस बार जब वह कोचीन कैंसर रिसर्च सेंटर पहुँचा तो देखा, अस्पताल के बाहर उसी की तरह बहुत सारे मरीज बैठे हैं। कई डॉक्टर गेट के पास खड़े थे।

डॉ. करुणाकरण को देखकर उसने 'आदाब' किया, ''डॉक्टर साब, आज मेरी तारीख है।''

''मुझे मालूम है। लेकिन आज तुम्हारा काम हो नहीं पाएगा।''

''बात क्या है डॉक्टर साब? इतनी दूर से हमलोग आए हैं!'' बात करते हुए उसे कष्ट हो रहा था। एक-एक शब्द गले से मानो चुभते हुए निकल रहा था।

''अब तुम्हें क्या बताएँ! मेरा कुछ कहना ठीक नहीं होगा। यहाँ अस्पताल में कुछ

गड़बड़ी सामने आई है। हम डॉक्टर लोग इसके लिए हड़ताल पर जा रहे हैं।''

''हड़ताल!'' हासनकुट्टि का सिर मानो सीने पर लटक गया।

किसी तरह से वह वापस आया। सड़क के किनारे एक जगह बैठकर वह सुस्ता रहा था। और कई रोगी उसी के पास बैठे थे। तभी अचानक किसी मरीज का एक नौजवान लड़का आया। उसका चेहरा तमतमाया हुआ था। उसने हाथ हिला-हिलाकर कहा, ''देखो तमाशा, हम लोग यहाँ इलाज करवाने आते हैं कि मरने आते हैं?''

उसकी माँ ने पूछा, ''क्या हुआ बेटा? बात क्या है?''

''किस बात की हड़ताल है भाई?''

''यहाँ इलाज में ऐसी दवा भी दी जाती है जो शरीर में जहर का काम करती है। उससे आँख की रोशनी तक जा सकती...''

''अरे, वही बात हो रही थी! ये सब बातें थोड़े छुपी रहती हैं! अभी तो गरीब लोगों पर इसका असर देख रहे हैं। बाद में सभी को देंगे।''

बस और क्या था! कई मरीज कहने लगे, ''हाँ-हाँ, इन दिनों मुझे भी रात में कुछ नहीं सुझाता!''

तो किसी ने कहा, ''हर समय चक्कर आता है। उल्टी मालूम होती है।''

भले ही इन्हें वह दवा दी गई हो या नहीं।

उस लड़के ने कहा, ''डॉक्टर लोग स्वयं इस प्रयोग के खिलाफ लामबंद हो रहे हैं। तभी तो यह हड़ताल है!''

हासनकुट्टि को धीरे-धीरे सभी बातें समझ में आईं। वह चुपचाप गाँव की ओर चल पड़ा। घर में उसने किसी से कहा भी नहीं कि इस बार उसकी सेंक हो नहीं पाई। इतनी दूर जाना बेकार हो गया।

कुंजपातुम्मा को भी कुछ नहीं मालूम था। इन बातों से वह बिलकुल अनजान थी। अखबार की गाड़ी पर खबरों की सवारी इनके घरों तक नहीं पहुँचती है।

हासनकुट्टि ने सोचा, कहावत है- बदकिस्मत जब पहुँचा थककर, पल में सूख गया था सागर!

*(क्रमशः ...)*

*सी-26/35-40 ए, रामकटोरा*
*वाराणसी-221001*
*(उत्तर प्रदेश)*

**From NBT's Treasure Trove**

# Peacock Plumes

**Mayakshi Chattopadhyaya**

In days gone by, there was an ancient city which was the richest and most beautiful city in the world, encircled by towering mountains that swept skywards to reach the sun-kissed clouds. Through the valley, like a streak of silver lightning flowed a river, wandering into dreamy lotus pools that looked like emerald islands floating on a silver cloud.

Across the river, in a magnificent mansion, there lived a rich merchant with his three beautiful daughters. So good and so gentle were his daughters that the merchant loved them dearly. There was nothing in the world that he did not give them. They played with golden dolls that opened and closed their emerald eyes. They had magic birds that could sing enchanted songs and crystal dream boats that took them to mysterious worlds of fairy dreams.

But, though the rich merchant truly loved his three daughters, he loved himself more. And, even more than himself he loved his worldly wealth and his earthly possessions.

One day, the merchant called for his daughters and said to them, "Dear daughters, tell me by whose fortune do you live and enjoy all the wonderful things of the world?"

The eldest one, bowed in respect and replied: "Dear Father, I get my good living by your good fortune."

The second one, kissed her father's head and said: "Good Father, all the wealth and beauty of my life comes from your fortune." But the third one looked straight into the merchant's eyes and said: "Father, I live by my own fortune and my luck."

"Ungrateful Child!" said the angry merchant, "This very day, you shall not only leave my house, but also all the precious gifts I have showered on you. Then, I shall see how you live by your own fortune and your luck!"

The little girl wiped her tears and said, "O Father! I shall do as you please, but grant me one last wish. Please allow me to take with me, my box of needle and thread." The father granted the wish and the poor little girl was sent away to a forest, far away from the city and

beyond the mighty mountains.

At the first glimpse of the forest, the girl was charmed by the green grandeur of tall trees, swaying to the melody of singing streams. She looked with wonder at the starry snowdrops and shy violets, growing in the cleft of moss-covered rocks. Enchanted, she watched the lightning flash of the blue-bird's flight and followed the trail of butterflies bright as she danced to the tap-tap-tap of the woodpecker's beat. But, as the dying glow of the sunset sky deepened amethyst dusk, her thoughts returned to her home, her father and her sisters and the beautiful city she so dearly loved. The sudden silence of the forest stilled her joy, as she sat beneath great, green tree and wept bitterly.

When the great, green tree saw the little girl weeping, it shook with sorrow, for it knew the dangers of the forest night. "Sweet Child!" whispered the kind tree, "in a short while, the forest beasts will come out of their lairs in search of prey and if they see you, they will devour you. But do not fear, little one, I shall save you from all harm. When you see my trunk opening, step inside and the trunk will close around you and you will be safe through the night."

In a moment, the trunk opened and the little girl stepped in as it closed gently around her.

Soon, the hungry beasts came out in search of their prey. Crazed by the scent of human blood, they circled round and round the great green tree. They roared and growled and howled, as they clawed its bark and dug deep furrows into its trunk. They tore down its branches, scattered it leaves and crushed its fruit. But, with the first ray of morning light, the forest quietened and the beasts returned to their lairs

"The sun is shining and the forest has awoken to a beautiful day! Now, you can safely come out," said the kind tree. But, when the little girl stepped out, and saw the poor tree stripped bare of branches, leaves and fruit, she gasped with sorrow and cried, "Good Mother Tree! how much pain you have suffered to save me from the brutal beasts! I will fetch some moist earth and smooth it over your bleeding trunk, to soothe and heal your wounds."

As the little girl gently smoothed the moist earth over the Mother Tree's wounds, she said: "Thank you my child! My wounds are soothed and I am no longer in pain. Come, eat the fruit of my sister tree that grows beside me and listen to what I say. In the heart of the forest, there is a pool of cystal water, where a thousand lotus blossoms bloom. Gather a handful of lotus seeds each day, scatter them around the pool and return to me when the sun goes down".

Though the little girl did not understand the reason, she went to the lotus pool, picked a handful of lotus seeds, scattered them around the pool, and as the sun was setting, she returned to her home in the Mother Tree's trunk.

The next morning, when the little girl went back to the lotus pool, she saw a brilliant blaze of blue-green plumes, shimmering in the golden sunshine. A thousand spleendoured peacocks had flown down to the pool, to feast on the delicious lotus seeds. They quarrelled, pecked and plucked each other's plumes, as they snapped up the seeds, leaving behind them a glittering trail of peacock plumes.

Full of excitement, the little girl gathered the plumes and ran back to show them to the Mother Tree. Swaying with delight, that tree said, "Now my little one, stitch these plumes together with your needle and thread and make them into fans. When you have made a hundred fans, go with them to the edge of the forest and sell them to the travelling merchants."

*(To be completed in the next issue...)*

(From the NBT Publication
*The Kingdom of the Blue Skies*)

# हम बच्चे हरदम तैयार

अब्दुल मलिक ख़ान

जग में नाम कमाने को
हर आफत से टकराने को
हम बच्चे हरदम तैयार

बाधाओं से लड़ना सीखें
हार न मानें तूफानों से
बुरी बात से नफरत हमको
प्यार हमें इनसानों से

गाँव, गली महकाने को
सेवा का वचन निभाने को
हम बच्चे हरदम तैयार

सींच-सींच अमृत से धरती
हीरे-मोती उपजाएँगे
नूतन युग की नव बयार से
घर-घर खुशहाली लाएँगे

पंख लगा उड़ जाने को
किरणों का महल बनाने को
हम बच्चे हरदम तैयार

गंगा-यमुना की धरती पर
नहीं किसी को आने देंगे
रंग-बिरंगी फुलवारी में
आग नहीं बरसाने देंगे

हिंसा से टकराने को
दुश्मन को सबक सिखाने को
हम बच्चे हरदम तैयार।

*रामनगर-भवानीमंडी*
*जिला-झालावाड़-326502 (राजस्थान)*

# Bipin Master's Ghost

Sumit Talukdar

Because of continuous rain, road had become muddy and slippery. Though he faced a good deal of trouble, he wished to reach home as soon as possible.

Suddenly, darkness descended like a thick blanket. Crickets started buzzing. There was a deadly silence. Santanu was panic-stricken. All of a sudden, somebody whispered in his ears, "What's the formula of $(a + b)^2$, Santanu?" Being weak in mathematics, it was easy to answer zero.

Trembling in fear he looked behind. But nobody was around.

Again the voice whispered — "What's the formula of $(a - b)^2$, Santanu?" This time the voice sounded very close to him. But again he could not see anyone.

Extremely afraid and confused, he fell down on the muddy road from his cycle. A cut mark could be seen on his knee. Blood was oozing out. Somehow, he managed to reach his house.

His mother was surprised to see his wound and said, "Oh, my child! How did you cut your knee? Certainly you had a fight with somebody again. But Santanu paying no heed to his mother replied, "Oh, fighting, not at all mom!"

"Then, how did it cut? The blood is oozing. Mud is also smeared. Wash your hands and feet

well. Let me dress your wound and apply some ointment,"said his mother.

The voice was still spinning in his head, he went to his study-room and started getting the formulas by heart.

His mother was still astonished to see Santanu's eagerness and attention towards his study. However, she went to her room to watch television.

Santanu suddenly cried out to his mother. "Mom, switch off your TV. Don't you see I'm studying."

His mother being little perplexed replied, "My child, you are right. It's my mistake. I could not understand that you are expremely busy in your study."

She switched off the television and Santanu started reading aloud: "$(a + b)^2$ is equal to $a^2 + 2ab + b^2$."

Entering the class-room, Santanu sat on the first bench. The first boy of the class, Jadunath threatened him, "How dare you, Santanu, sit in my place?"

"Nobody can buy a seat. Whoever comes first, sits first," said Santanu.

"I'm the first boy of the class. Only I have the right to sit on the first bench. Go and sit on the last bench," said Jadunath.

The other students started laughing.

Santanu felt humiliated.

He thought, "I'm weak in studies. I get zero in mathematics. Life is futile without education. Jadunath has a strong self-esteem because he always stands first in the examination."

Santanu promised to himself that he will break his self-conceit and arrogance.

Coming close to the bamboo-bush, Santanu waits for someone. Today he is not afraid of anything. Strange enough to say, he no more gets zero in mathematics. He can say all the algebra formulas very easily. All this has been possible because of that unknown invisible person. He has grown stronger and has curiosity to learn everything. Because of that very person he no longer is afraid of mathematics.

Jadunath gradually became jealous of him. His monopoly of dominance to always stand first in the class was almost over.

Santanu wished to thank that invisible person. Today he must know – Who is he? What does he want from him?

For a long one hour, Santanu waits for that person on the wet muddy road. Mosquitoes bite him but he is not at all hopeless.

Suddenly, the bamboo-bush lightly shakes in the wind. Crickets start buzzing. An owl hooting in the sky breaks

the silence.

A shadowy figure comes close to him.

Santanu fearlessly asks him, "Who are you?"

The figure with a nasal tone replies, "I'm Bipin Master."

"But ... he ... he is dead. A bus knocked him down while crossing the road!"

"You are right, Santanu. Yes I'm dead, non-existent and unembodied. People take me as a ghost. They are frightened of me. They never listen to me."

"I'm a responsible teacher. I feel really pleased to help students like you who sit on the last bench. This is a noble mission yet to be done. All the algebra formulas are now stored in your vivid memory. This has been only possible because you are no longer afraid of me. Now you are not at all weak in mathematics. You must stand first, Santanu! And then is my eternal peace and emancipation."

"Can I do this, Sir?"

"Why not? Nothing is impossible in this world. But not only mathematics, you will have to be competent in English, science and other subjects too."

"If you are beside me, I can certainly defeat Jadunath."

"Oh, you are just like one of my best students. You are dauntless and challenging. Well, tell me what will be formed if $H_2$ and $O_2$ are mixed?"

"Water. Sir."

"Good."

"Now tell me whether Sugar is countable or uncountable noun?"

"Uncountable noun, Sir."

"Excellent Santanu, you must succeed."

Santanu bows his head down and remains silent in the deep darkness. Bipin Master blesses him with his invisible hand.

Finally, obtaining the result of examination. Santanu could not even believe his own eyes. Is it possible at all? Such great success in his life was indeed beyond expectation! Is he seeing an apparition laughing at him? He again carefully checks his mark-sheet.

No mistake. He stood first.

Headmaster Manotosh Lahiri tells Santanu while blessing him with his hand over his head, "I did not know that so much talent is stored inside you." Santanu says smilingly, "I do not even know myself, Sir."

"You are simply cutting jokes with me, Santanu."

"No, no Sir. Believe me. Actually how I stood first is just like a miracle for me."

"No miracle, Santanu. You succeeded because you worked hard. I know you very well. Last bencher triumphs at last. But you will have to go far beyond to reach the goal. You are a pride of our school. Carry on, Santanu."

Santanu stares at Jadunath obliquely.

He wipes his tearful eyes with handkerchief. He could not tolerate such a strong blow. Santanu ponders over Judanth's behaviour. "You insulted me that day while sitting on the first bench. Today I have taken the revenge."

But that invisible man, his one and only beloved Bipin Master, who has helped him so much, is he aware that one of his best students, Santanu has stood first in the examination? He has kept his words.

Santanu runs fast on the muddy road to reach the bamboo-bush so as to meet his beloved Bipin Master. The bamboo-leaves swing in mild wind. But where is his Master? He waits for hours. He shouts , "Sir, Sir, I have kept your words. I stood first, Sir." There was silence and no response from the master, only his voice echoed in the air. Perhaps, Bipin Master has been truly emancipated from our mortal world.

*58, Shyam Road, P.O. Naihati*
*Dist. North 24-Parganas - 743165*
*(West Bengal)*

# एक मिनट का चक्कर

सरोजनी प्रसाद

टिंकू के साथ हमेशा ऐसा होता था, सिर्फ एक मिनट की देरी से उसका बनता काम बिगड़ जाता था। हर बार वह यही कोशिश करता कि सब कुछ ठीक-ठाक प्लान करे, ताकि जरा-सी भी देरी न हो, पर जाने क्यों वह 'एक मिनट' उससे बाजी मार ले जाता था।

गरमी की छुट्टियाँ शुरू होने वाली थीं। छुट्टी में तो नानी के घर या फिर दादी के घर जाना सबसे बेहतरीन 'डेस्टिनेशन' होता है। वहाँ खूब प्यार मिलता है, आवभगत होती है, खेलने की पूरी छूट होती है। तिस पर से तरह-तरह की कहानियाँ सुनने को मिलती हैं, सो अलग।

उसने नानी के घर जाने के लिए राजधानी एक्सप्रेस का टिकट पापा से मँगवाया। टिंकू

को पता था कि दूसरी ट्रेनों का कोई भरोसा नहीं, उनका तो लेट-वेट चलने का कार्यक्रम रहता है। एक 'राजधानी' है जो समय पर चलती है, इसलिए इस बार वो मम्मी के साथ उसी ट्रेन से जाएगा।

जिस दिन जाना था, उस दिन टिंकू सुबह जागकर तैयार हो गया। सामान तो पहले से ही तैयार था। नाश्ता-वाश्ता करके फटाफट मम्मी को बुलाने के लिए किचेन में गया। उसे लग रहा था कि मम्मी लेट करा देंगीं।

पर ये क्या, मम्मी तो तैयार थीं! तब तक उसके पापा अपनी गाड़ी गैराज से निकाल चुके थे। वह गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी पूरी रफ्तार से चल रही थी। भीड़-भड़क्का के बाद भी पापा की पूरी कोशिश थी कि जल्दी से स्टेशन पहुँचें। इतने में कार अचानक रुक गई।

कार पुरानी थी, इंजन जवाब दे गया था। अब मेकैनिक को बुलाने या उसके पास गाड़ी ले जाने का समय तो था नहीं!

तीनों की याददाश्त ने थोड़ी देर के लिए काम करना बंद कर दिया था। अचानक उन्हें पास के टैक्सी स्टैंड की याद आई। टिंकू ने कहा, ''पापा, मैं देख आता हूँ कि टैक्सी है या नहीं।''

गिरते-पड़ते, भागा-भागा वह पहुँचा तो पाया स्टैंड खाली था। अभी-अभी एक मिनट पहले आखिरी टैक्सी जा चुकी थी।

टिंकू वापस आया तो देखा, पापा ने गाड़ी को जिस किसी तरह से ठोक-पीटकर ठीक कर लिया है। खैर भई! फिर चले।

अब ट्रैफिक की भाड़ी भीड़ से जिस किसी तरह से बचते-बचाते निकले। ऐसी बेतरतीब ट्रैफिक में गाड़ी चलाने वालों को तो 'गोल्ड मेडल' जरूर मिलना चाहिए। जाने कब गलती से वे एक रेड लाइट पार कर गए। ट्रैफिक पुलिस ने जोर से व्हिसल मारी। गाड़ी को रोकना पड़ा।

लाख मनाया, दुहाइयाँ दीं, ट्रेन पकड़नी है, पर सब बेकार। पुलिसवाले ने ड्राइविंग लाइसेंस माँगा, जिसे टिंकू के पापा आराम से घर पर छोड़ आए थे। अब लो! खैर भई। फाइन वगैरह भरकर वे फिर चले।

एक 'ऐतिहासिक यात्रा' की समाप्ति पर वे स्टेशन पहुँचे। चारों ओर कूड़े-कचरे से सजा था स्टेशन। बाकी जगहें जो कूड़े से खाली थीं, वहाँ पर पूरे शहर के लोग भीड़ लगाए खड़े थे। इधर सामान, उधर सामान, उधर आदमी-बच्चे-औरतें। बड़ी मुश्किल से जरा-सी जगह मिली, तो टिंकू के पापा ने गाड़ी को पार्क किया।

टिंकू और मम्मी सूटकेस लेकर दौड़े। भागे-भागे प्लेटफॉर्म पर पहुँचे। देखा, राजधानी का 'टेल' प्लेटफॉर्म के आखिरी सिरे से निकलकर जा रहा है। लोग हाथ हिला रहे हैं। राजधानी बस, एक मिनट पहले जा चुकी थी।

*सी-704, सहारा अपार्टमेंट*
*सेक्टर-6, प्लॉट-11, द्वारका, नई दिल्ली-110075*

# A Lively Interaction

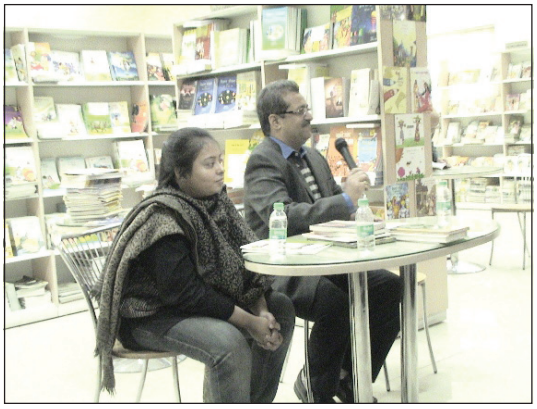

As a part of National Book Week celebrations, National Centre for Children's Literature organised an interactive storytelling session for school children with Shri Suryanath Singh, author and Ms Mistunee Chowdhury, illustrator of NBT book *Saat Suraj Sattavan Tare* at its premises, Nehru Bhawan, Vasant Kunj, New Delhi on 19 November 2013. The session, divided into two parts, was held in NBT's Book Shop and NCCL Library.

Shri Suryanath Singh said that he likes to write science fiction stories based on aliens and planets, especially for children and young adults. He added that as he had been a science student, he could fantasize the life of aliens using different kinds of gadgets living in different planets in the universe.

Ms Mistunee Chowdhury gave a presentation on her illustrations used in the book and gave tips to the children for preparing illustrations. She said that illustrations are an integral part of children's books as they attract children and inspire them to read books and open up their faculties to imagine.

The children glanced through the books available in the NCCL Library on various subjects related to children's literature in different Indian and foreign languages. The children also asked several questions to the author and illustrator regarding their favourite authors, books and hobbies, besides queries on basics of writing and illustrating.

At the outset, Shri M A Sikandar, Director, NBT welcomed the paricipating school children and teachers present on the occasion. He urged children to read books apart from their textbooks as books provide immense pleasure, impart knowledge and develop reading habit.

Over 150 students accompanied with their teachers from different schools of Delhi and NCR including Bal Bharti School, Dwarka, Bloom Public School, Vasant Kunj and Sri Sathya Sai Vidya Vihar, Kalkaji particpated in the session.

# Festival of Reading at Silvassa and Daman

National Book Trust, India in collaboration with the Deptt. of Art and Culture, Union Territory of Diu, Daman and Silvassa organized two 2-day Festivals of Reading at Silvassa and Daman on 11-12 and 13-14 September 2013 respectively. The festivals incorporated in it display-cum-sale of books by the Western Regional Office as well as art workshops, interactive sessions and an orientation for school teachers on Readers' Club Movement by the National Centre for Children's Literature of the Trust.

The 2-day Festival at Silvassa was inaugurated by Shri Sunil Saxena Secretary, Deptt. of Art and Culture of Diu, Daman and Silvassa at Govt. Higher Secondary School, Silvassa. While appreciating NBT's relentless effort for promotion of reading habit in the country, Shri Saxena hoped that NBT will continue holding such events in small towns and countryside places on regular basis so as to reaching the masses.

The 2-day Festival at Govt. Sr. Secondary School, Moti Daman was inaugurated by Shri Lalubhai B. Patel, Member of Parliament (Lok Sabha), Daman and Diu. Shri A.A braham, Secretary, School Education, Shri Sunil Saxena, Secretary, Art and Culture and Shri Aabid Surti,

eminent cartoonist were the guests of honour on the occasion. Shri Patel stressed on the need to publish more books for children on Indian themes. He also emphasized on more publication of books on Indian Culture and Lifestyle by NBT.

Shri Aabid Surti, eminent cartoonist, author and water conservation activist conducted workshops for teachers and children on Cartoon Making at both the places as well as interacted with the participants on *Art as a Career.* Over 30 schools of Daman were enrolled in the Readers' Club Movement on the occasion and the teacher coordinators were oriented on *How to run a Readers' Club.* Ms. Usha Nair, Regional Manager (NBT-WRO, Mumbai) and Shri Manas Ranjan Mahapatra, Editor (NBT-NCCL,New Delhi) coordinated the Festival.

# The Good News

**Avril Dsouza**

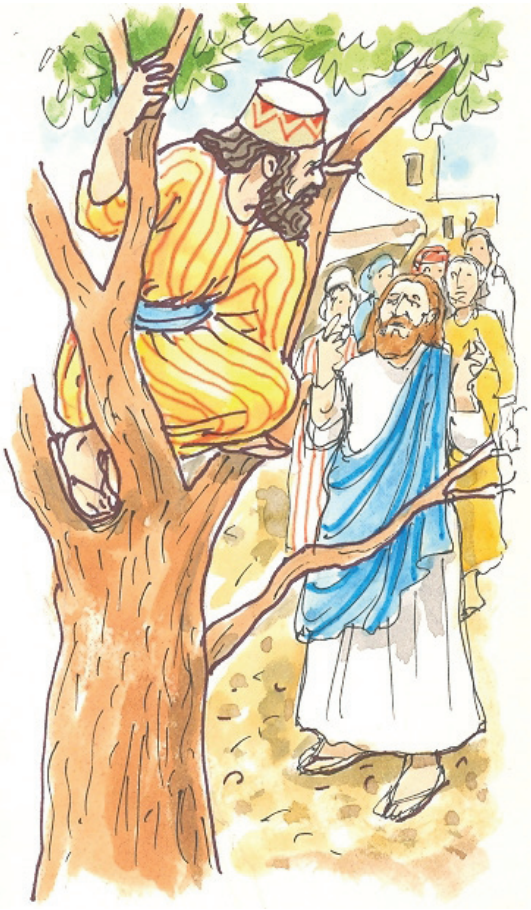

Zack was a very rich man. He lived in Jericho. But Zack was not popular as he had earned his wealth dishonestly.

"What's up Abou?" asked Zack when he saw his friend Abou joining the crowds that were on the streets in Jericho. He was up on his balcony, enjoying a bowl of grapes.

"Don't you know Zack? A Great Teacher is coming to Jericho this morning. And he is bringing a good news," Abou told him.

"*Teacher*, *Good News*? I wish someone could tell me more," Zack said as he watched Abou fade into the jostling crowd. Zack wanted to know more about the Teacher, he had never met.

Some silent inner voice stirred inside him, 'Move Zack, take the first step to meet the Teacher, there may be a good news for you as well.' He set the bowl of grapes aside, ran downstairs and soon mingled with the crowds.

Suddenly, Zack realized he had a problem. He was short as compared to those around him. He had everything; food, clothes, riches, lands but he had no height. How was he to get a glimpse of the ambassador of the good news?

When he was young his father used to say, "There is no problem that has no solution." Now that same voice surfaced from within: 'Go find a solution, Zack', it whispered.

Zack walked and he thought.

He thought and he walked.

Then he took the other route and raced ahead of the others so as to reach

the main road before them. He saw a Sycamore tree and climbed it. Now from this height he could see the messenger of the good news without any difficulty. He sat in a fork of the tree, very silently and very patiently.

At a small distance away, he saw a small crowd turn a corner and coming towards the Sycamore. Abou and the rest of the crowd surged forward to meet them.

Then Zack saw Him! Zack knew, THAT must be HE, the Teacher!

Something tugged deep inside him. He was glad he was where he was, at that moment.

All at once the teacher stopped and the people stopped too.

Zack breathed heavily.

The teacher was staring at Zack.

"He knows me!" Zack told himself. "He knows that my riches are not honest. He knows about my greed and avarice."

But Zack did not mind. He felt magnetically drawn towards the great Teacher. It hardly mattered to him if the Teacher knew about his unfair ways. Zack was willing to tell Him everything about himself. Zack even didn't mind doing whatever the Teacher wanted him to do.

"Zack," the Teacher said.

Zack gulped.

"He knows my name," Zack thought. Zack trembled. He was scared yet happy.

"Hurry up! Zack. I wish to stay in your house today," the Teacher said. He was Jesus of Nazareth.

His voice was music to Zack's ears. His knees felt weak but he raced down quickly, as quickly as a young lad would.

"Great Teacher, please do come, my family and I will be too glad to welcome you," Zack said.

He sent Abou over to his house to tell his wife to get a meal ready.

But the people were angry. They grumbled about Zack. They said that he was the most unpopular person in Jericho.

For a moment, Zack was afraid that Jesus would change his mind. Zack said to Jesus, "Sir, I will give half my belongings to the poor and if I have cheated anyone, I will pay him four times back."

Jesus smiled.

Zack knew that he was forgiven.

One of His friends asked, "What makes Zack special?"

Zack shifted uneasily.

Jesus sampled a morsel of food. He liked it. He said, "Zack has got a *Good News*. When we come down from stubborn Pride, we experience Peace".

*I.C. Villa, Plot No. 939, Kuvempunagar,*
*P.O. Hindalga–590008 (Karnataka)*

# दो कविताएँ

कलीम आनंद

## धूप

रुई के गालों-सी धूप
हिरनी की चालों-सी धूप
नानी के कपड़ों-जैसी तो
दादा के बालों-सी धूप
घर-आँगन सब पहने रहते
मनभावन मालों-सी धूप
जाड़े में सुखदायी लगती
गरमी में भालों-सी धूप।

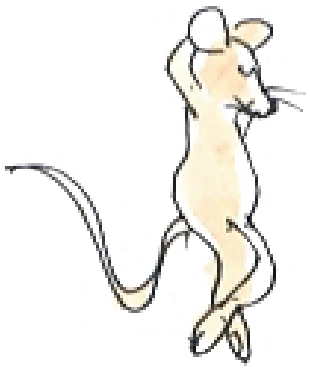

## आलस

एक थे मिस्टर चूहेराम
खाया करते थे बादाम
तोड़ा करते दिनभर खाट
सोए रहते सुबहो-शाम
एक दिन बिल्ली मौसी आई
झटपट भागे, जान बचाई
फिर से बात समझ में आई
'आलस बुरी बला है भाई'!

*द्वारा डॉ. कमल चोपड़ा*
*1600/114, त्रिनगर, दिल्ली-110035*

# गिरगिट ने रंग बदला

डॉ. मोहम्मद साजिद ख़ान

एक वन था, बहुत ही सुंदर। चारों ओर का वातावरण हरा-भरा था—फूल मुस्कराते, पक्षी चहचहाते, लताएँ पेड़ों से लटककर झूला झूलतीं! वन के बीच में पुराना और गहरा कुआँ था। पहले इधर से लोगों का आना-जाना रहा होगा, पर आज यह जगह कँटीली झाड़ियों से ढँक गई थी। अब कभी-कभार ही कोई इधर आता था।

कुआँ पुराना होने के कारण जगह-जगह से टूटा हुआ था। चूँकि यह जगह ठंडी थी, इसलिए चारों ओर हरी-भरी घास उग आई थी। खरगोश उसे अकसर खाने आ जाते।

इस कुएँ में एक मेंढक बहुत समय से रह रहा था। उसे खाने को ढेरों कीट मिल जाते थे। मच्छरों की तो भरमार थी, इसलिए वह यहाँ सुकून से था और खा-खाकर मोटा हो गया था।

पर उसे इस बात की चिंता थी कि उसका कोई साथी नहीं था। जब कभी कोई नन्हा जानवर उधर आता भी तो कुएँ में झाँककर डरते हुए कहता, ''भागो भाई, अगर इसमें गिर गए तो आफत ही आ जाएगी!''

मेंढक उदास रहता। उसके लिए कुआँ ही उसकी दुनिया थी। और जितना ऊपर आकाश दिखता था, वही उसके लिए कल्पना का सागर था। वह जब भी किसी पक्षी को उड़ते हुए देखता तो सोचता, 'इसका मतलब मेरे संसार के बाद भी बहुत कुछ है!'

इधर कुछ दिनों से फूलों की एक लता कुएँ की ओर बढ़ती आ रही थी। वह कुएँ की जगत के किनारे लगे पेड़ से लटक रही थी।

एक दिन एक गिरगिट लता के सहारे कुएँ में उतर आया। यहाँ पर कीटों की भरमार थी। गिरगिट के लिए यह अच्छा भोजन था।

जब मेंढक की नज़र उस पर पड़ी तो उसने पूछा, ''टर्र... टर्र...! यहाँ क्या कर रहे हो भाई?''

मेंढक की आवाज़ सुनकर पहले तो गिरगिट सिटपिटाया, पर उसने सोचा, 'आखिर यह है तो कूपमंडूक ही!' वह संयत होता हुआ बोला, ''यहाँ बहुत-सारे हरे टिड्डे हैं, उन्हें खाने आया हूँ।''

''ठीक है भाई, शौक से खाओ।'' मेंढक ने हँसते हुए कहा।

फिर तो गिरगिट रोज़ आने लगा। धीरे-धीरे दोनों में दोस्ती हो गई। पर गिरगिट चालाक था। वह रोज़-रोज़ मेंढक को बाहर की रंगीनियाँ सुनाने के बहाने आता और ढेर सारे कीट चट कर जाता। वह मेंढक के हिस्से के भी कीट खा जाता। फिर कहता, ''दोस्त, तुम्हारी दुनिया से बड़ी मेरी दुनिया है। वहाँ बहुत विशाल जीव-जंतु रहते हैं!''

''मुझसे भी बड़े!'' मेंढक को आश्चर्य हुआ।

गिरगिट हँसने लगा, ''भाई, मेरी दुनिया के तो तुम बहुत ही छोटे जीवों में हो। हमारी दुनिया में हाथी और व्हेल जैसे बड़े-बड़े जीव हैं!''

''यह हाथी कैसा होता है?''

''बहुत ही बड़ा... तुमसे हजार गुना बड़ा!'' गिरगिट ने बात को और भी स्पष्ट किया, ''तुम्हारी इस दुनिया से भी बड़ा। लेकिन इनसान सबसे चालाक होता है। वह उसे भी बस में कर लेता है और उससे बोझा ढोने का काम करवाता है।''

''अच्छा!'' मेंढक को बहुत आश्चर्य हुआ।

अब तक गिरगिट समझ चुका था कि मेंढक निरा मूर्ख है। वह मन-ही-मन मुस्कराया। फिर बोला, ''तुम हमारी दुनिया देखोगे?''

''हाँ, पर ऊपर कैसे आऊँगा?''

''जब कोई इनसान इधर से गुज़रे और पानी पीने के लिए कुएँ में लोटा लटकाए तो तुम उसी में बैठकर ऊपर आ जाना।'' गिरगिट ने समझाया।

मेंढक इंतज़ार करने लगा।

किसी दिन एक मुसाफ़िर उधर से गुज़रा। वह पानी पीने के लिए कुएँ के पास आया। मेंढक के लिए इतना मौका काफ़ी था। वह बाहर आ गया। बाहर की दुनिया उसके लिए अद्‌भुत थी। वह एक-एक चीज़ आश्चर्य से देखने लगा।

गिरगिट उसे लेकर एक पोखर के पास गया और बोला, ''तुम यहाँ रह सकते हो।''

मेंढक बहुत खुश हुआ। वह खुशी-खुशी वहाँ रहने लगा।

एक दिन गिरगिट ने सोचा, 'क्यों न इस निरे मूर्ख को बहकाकर अपना उल्लू सीधा किया जाए!' अतः उसने मेंढक से कहा, ''भई, मैं सोच रहा हूँ कि अगर खाने का बंदोबस्त हम दोनों मिलकर करें, तो अधिक ठीक होगा।'' उसने पूरी योजना समझाते हुए कहा, ''हम दोनों कीट इकट्ठा करेंगे, फिर साथ-साथ खाएँगे।''

मेंढक को यह बात अच्छी लगी। वह तैयार हो गया। वह कीट इकट्ठा करने में जुट गया।

पर गिरगिट चालाक था। वह दिनभर इधर-उधर घूमता रहता और शाम होते ही हिस्सा-बाँट करने आ जाता।

एक दिन सामने पेड़ पर रहने वाली चुलबुली गौरैया से नहीं रहा गया। उसने मेंढक को सारी बात बता दी, ''तुम कूपमंडूक हो न! वह तुम्हें मूर्ख बना रहा है। तुम अकेले भोजन इकट्ठा करते हो और वह हिस्सा-बाँट करने आ जाता है।''

''अच्छा, ऐसी बात है!'' मेंढक गुस्से से लाल हो उठा।

उधर जब गिरगिट को यह बात पता चली तो उसने सोचा, 'अगर मेंढक के सामने जाऊँगा तो बहुत शर्मिंदगी होगी। अब तो एक ही चारा है, रंग बदलने का।'

उसने तुरंत अपना रंग बदल लिया।

मेंढक उसे खोजता रहा, खोजता रहा। पर वह कहाँ मिलता? वह तो रंग बदलकर झाड़ियों में छिप गया था।

*असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग*
*जी.एफ. (पी.जी.) कॉलेज, शाहजहाँपुर (उ.प्र.)*

## धूप

**विजय बजाज**

सरदी में तुम प्यारी लगती
मौसम को गरमाती हो
बारिश में हम याद करें
लेकिन पास न आती हो
गरमी में सब कुछ जल जाए
तुम क्यूँ इतना गुस्साती हो?

*भरूच (गुजरात)*

# Foolishness

Srihari Nayak

Many many years ago, there were no dispensaries or any other medical centres. There were only *Vaidyas* and *Hakims* in some villages. Patients were taken to *Vaidyas* for medical treatment.

Population was scarce and the roads connecting one village to another were almost non-existent. People were healthy and very few people used to fall ill. There was plenty of fertile land. People cultivated their land and lived happily.

The King of the State was very powerful. He had his own *Vaidya* for the treatment of the royal family. The *Vaidya* lived in the palace.

The *Vaidya* of the kingdom became very old. One day he told his only son that as per the tradition after his death he will have to take care of the royal family.

He told him that it is a very responsible job. Before expressing any opinion about the disease, you should see the face of the patient and make an idea about his pain. Face is the index of a man. The pain will have reflection in his face and eyes. He should also look at the surroundings of room.

The old *Vaidya* gave an example.

He said that one day the King called him as the King was having severe pain in his chest. He examined the face, chest and belly of the King. He looked around the surroundings of the room where the King was sleeping.

He found some parched rice below the bedside. He told the King that the pain was due to food. He said, "Probably your highness has taken some parched rice. This has caused gas in the stomach. So you are having pain."

The King agreed to the *Vaidya*'s finding. He was very happy with the *Vaidya*'s knowledge and rewarded him handsomely.

After the death of the father, the son became the *Vaidya* of the palace.

One day the King called for the *Vaidya*'s son for his ailment. He came, saw the face of the King and looked at the surroundings of the room.

He found a cat sitting under the cot. Without thinking about the cause of the pain, the *Vaidya*'s son said, "*Maharaj*! You have eaten a cat today. Therefore, you are unwell".

The King became very furious and called the *Senapati* and ordered him to put the *Vaidya*'s son in prison.

*D-II/61, Kaka Nagar*
*New Delhi-110003*

# Smile

**Jigyasa Kharbanda**

A simple smile
Shines all over miles
It covers all lies
And a smiling heart
Never dies

Silence just ignores
All cries
But smile solves
All the problems
Of this life as long as Nile

A simple smile
To make you happy
Charges no fee
It is all free

It creates a joyful nature
Just follow it and you will see
It is a key
Of the lock at the door
Of magic which finishes all cries !

*House No. 447/15-A*
*Chandigarh (UT)*

# सफरनामा दीपक का

राजकुमार जैन

भारतीय संस्कृति में 'दीपक' को सत्य, ज्ञान, जागृति और आत्मिक आलोक का जीवंत प्रतीक माना गया है। दीपक स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश प्रदान करता है। दीपक की इसी प्रवृत्ति के कारण वेदों में उसे ब्रह्मा-स्वरूप माना गया है।

'दीपक' की उत्पत्ति कब, कैसे और किसके द्वारा हुई, इस संबंध में कोई निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं है, किंतु यह तो तयशुदा तथ्य है कि दीपक का यह सफर हजारों साल पुराना है। अनुमान किया जाता है कि आदि-काल में आदमी ने सबसे पहले आग की खोज की थी, उसी के बाद 'दीपक' की परिकल्पना उत्पन्न हुई होगी।

पाषाण युग में आदमी ने पत्थर के दीपक जलाना सीख लिया था। इन दीपकों में तेल के स्थान पर पशुओं की चर्बी पिघलाकर डाली जाती थी और वृक्षों की पतली छाल को ऐंठकर बाती बनाई जाती थी। दीपक की इस प्रारंभिक अवस्था के प्रमाण कई पुरातत्वीय खोजों में खुदाई के दौरान प्राप्त हुए हैं।

दीपक की यह विकास-यात्रा क्रमशः आगे बढ़ी और सीप से बने दीए अस्तित्व में आए। इनमें प्रयुक्त होने वाली सामग्री वही पशुओं की चर्बी और पेड़ की छाल थी। केवल दीपक का आकार बदल गया था। फिर धीरे-धीरे आदमी ने मिट्टी के दीपक बनाना सीखा। इनमें सरसों, जैतून और शीशम का तेल जलाया जाता था।

धातुओं के आविष्कार के पश्चात तो दीपक की यह विकास-यात्रा एकदम तेज हो गई। धातुओं को गलाकर इन्हें ढालकर सुंदर और कलात्मक दीपक बनाए जाने लगे। ये दीपक न केवल प्रकाश के लिए बल्कि सजावट के लिए भी प्रयुक्त होते थे। सोना, चाँदी, पीतल, ताँबा आदि धातुओं के नक्काशीदार अत्यंत आकर्षक दीपक बनाए जाते थे। धीरे-धीरे विभिन्न आकृतियों और ऊँचाई के मजबूत दीपक बनने लगे, जिन्हें अमीर लोग तथा राजा-महाराजा अपने महलों में लगाते थे। कई दीपदान तो 6-7 फुट ऊँचे होते थे। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में मिट्टी और धातुओं के दीपक और उन्हें रखने के लिए सुंदर कलात्मक स्तंभों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

प्राचीन काल में जब बिजली नहीं थी, धनाढ्य लोग अपने घरों में बड़े-बड़े झाड़-फानूसों में मोमबत्ती और दीए जलाकर प्रकाश करते थे। कई घरों में धातु के दीवार-गिर लगाए जाते थे।

कलात्मक दीपकों में हुए विकास के बाद नारी की आकृति के बने धातु के बड़े-बड़े

दीपक सामने आए। इन्हें 'दीपांगना' अथवा 'दीप-लक्ष्मी' कहा जाता था। ये दीप तत्कालीन भारत में अत्यधिक लोकप्रिय हुए। उस समय ऐसे दीपक रखना वैभव व संपन्नता का प्रतीक माना जाता था। वृक्ष की आकृति के 'वृक्ष-दीप' भी बहुत प्रचलित हुए। इन वृक्ष-दीपों में कई शाखाएँ होती थीं और प्रत्येक शाखा पर एक-एक दीपक रख दिया जाता था। वृक्ष-दीप का ऊपरी सिरा किसी देवता या पशु-पक्षी की अनुकृति हुआ करता था।

धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से धर्म-ग्रंथों में दीपक को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। वैदिक काल से ही इस दीपक की महिमा और उसके महत्व का बखान ऋषि-मुनियों द्वारा निरंतर किया जाता रहा है। कहा गया है कि 'सूर्यांश संभवो दीप', अर्थात दीपक सूर्य का ही अंश है। स्कंद-पुराण के अनुसार, दीपक की उत्पत्ति यज्ञ से होना माना गया है। वैदिक काल में यज्ञ आदि मानव के लिए देवताओं से संपर्क का माध्यम था। किंतु पौराणिक काल में मंदिरों के निर्माण के साथ ही यज्ञ-अग्नि से उत्पन्न हुए दीपक देवताओं के आह्वान का प्रमुख माध्यम बन गए। इस प्रकार सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व के कारण दीपक ने सूर्य- उपासना की विधियों में अपना अमिट स्थान बना लिया।

दीपक के स्वरूप में सतत परिवर्तन के लिए उसकी धार्मिक उपादेयता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आरती और पूजा-अर्चना के लिए सोना-चाँदी और पीतल जैसी धातुओं के विभिन्न आकृतियों वाले कई सुंदर नक्काशीदार दीपक बनाए गए। ये आरती के दीपक पंचमुखी और सप्तमुखी हुआ करते थे। इन्हें पीछे से पकड़ने के लिए हैंडिलनुमा मूठ बनी होती थी। कई आरती-दीप देवताओं, पशु-पक्षियों, नृतकों आदि की आकृतियों में निर्मित होते थे तथा इन्हें मंदिर की छतों पर

लटकाया जाता था। मंदिरों के प्रवेश-द्वार पर प्राचीन काल में बहुत बड़ी आकृति के दीप शेर या हाथी की शक्ल में बने होते थे। दक्षिण भारत के प्राचीन मंदिरों में आज भी इनकी झलक देखी जा सकती है। कई दीप शेष-नागरूपी पीतल के स्तंभ पर पाँच या सात अथवा ग्यारह छोटे-छोटे दीपकों द्वारा बनाए जाते थे।

धार्मिक व्रतों के अवसर पर नदी के किनारे पत्तों की शय्या पर दीप-दान की परंपरा भी प्राचीन काल से चली आ रही है। नदी में एक साथ झिलमिलाते सैकड़ों दीप अत्यंत रोमांचक और मनोहारी दृश्य उपस्थित करते हैं। दीपक जलाने की विधि भी शास्त्रों में उल्लेखित है। दीपक के अचानक बुझ जाने को लेकर भी कई मान्यताएँ प्रचलित हैं।

दीपक अपनी लंबी विकास-यात्रा तय करके आज इस मुकाम पर पहुँचा है। सोना, चाँदी, धातु, सीप, पत्थर और अन्यान्य पदार्थों से निर्मित दीपकों के बावजूद आज भी मिट्टी का दीपक ही सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रचलन में है। अब दीपक का निर्माण कुम्हार के चाक द्वारा होता है।

दीपावली के दिन झिलमिलाते सैकड़ों, हजारों दीपकों की लौ देखकर क्या आपके मन में यह प्रश्न नहीं घुमड़ता है कि आखिर लौ क्या है? वस्तुतः टिमटिमाती लौ एक सतत रासायनिक प्रक्रिया है, जिसमें वायुमंडल में व्याप्त ऑक्सीजन एक अभिकारक की

भूमिका निभाती है। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप बनने वाले उत्पाद सक्रिय क्षेत्र (लौ) से स्वतः बाहर जाते रहते हैं और जब तक ईंधन प्राप्त होता रहता है, यह रासायनिक प्रक्रिया जारी रहती है।

दीपक का यह सफरनामा अभी खत्म नहीं हुआ है। भले ही आज बिजली के जगमगाते बल्बों और ट्यूबलाइटों ने दीपक की जगह ले ली हों, लेकिन दीपक फिर भी हमारे जन-जीवन और संस्कृति का एक अनिवार्य हिस्सा बना रहेगा, क्योंकि दीपावली दीपक के बिना अधूरी होती है।

*राज स्टेशनर्स, पचपहाड़ रोड*
*भवानीमंडी (राजस्थान)*

# टॉमी को मिला घर

संदीप कपूर

उस प्यारे-से पिल्ले का कोई नाम नहीं था। गोलमटोल शरीर, सफेद रंग, माथे पर छोटा-सा काला टीका। उसे देखकर यूँ लगता जैसे किसी ने नजर से बचाने को काला टीका लगा दिया हो।

वह अपनी माँ और दूसरे भाई-बहनों के साथ खूब मस्ती कर रहा था। कभी अपने भाइयों की दुम पकड़ता तो कभी उनसे पंजे भिड़ाते हुए मिट्टी में पलटियाँ मारने लगता। फिर लुकाछिपी की बारी आई तो वह छिपने के चक्कर में सड़क किनारे पहुँच गया।

वहाँ से गुजर रहे एक शरारती बच्चे ने उसे उठाया और अपने साथ लेकर आगे बढ़ गया। उस बच्चे ने पिल्ले के कान खींचे तो वह दर्द से 'कूँ... कूँ...' करने लगा। तभी किसी के कहने पर उस बच्चे ने पिल्ले को नीचे पटक दिया।

अब पिल्ला बेहद परेशान था। अपनी माँ तथा भाई-बहनों को याद करके वह बार-बार रोने लगता। वह उनके पास कैसे जाता, उसे तो रास्ता ही नहीं पता था।

तभी वहाँ एक गाय आई। पिल्ले ने पूछा, ''तुम मेरे घर का पता जानती हो?''

गाय ने जवाब देने की बजाय सींग उठा दिए तो पिल्ला डरकर एक तरफ हो गया। उसे भूख भी लग रही थी। वह क्या करे, उसे कुछ सूझ नहीं रहा था।

सामने ही खाने-पीने के सामान की एक दुकान थी। उसके सामने ब्रेड का एक टुकड़ा देखकर पिल्ला आगे बढ़ा तो एक मोटी-सी बिल्ली उसे देखकर गुर्राई और वह ब्रेड का टुकड़ा उठा ले गई।

पिल्ला सहमकर एक तरफ बैठ गया। तभी वहाँ एक कार आकर रुकी। उसमें से एक बच्ची अपने पापा के साथ नीचे उतरी। उन्होंने दुकान से खाने-पीने का कुछ सामान खरीदा।

लौटते हुए पापा ने अपना पर्स जेब में डाला तो वह सरककर नीचे गिर गया। पर्स गिरते किसी ने नहीं देखा, पर पिल्ले की नजर उस पर पड़ गई।

वह समझदार था। उसे लगा कि वह चीज उस आदमी तक पहुँचा देनी चाहिए। वह पर्स अपने मुँह में पकड़कर लपककर उन दोनों के आगे जा पहुँचा।

पापा अपना पर्स देखकर हैरान रह गए। उन्होंने पर्स लिया और प्यार से पिल्ले को थपथपाते हुए बोले, ''तुम तो बड़े समझदार हो, शाबाश!''

''पापा, ये कितना प्यारा है! क्या हम इसे अपने साथ ले चलें?''

''सलोनी, तुमने मेरे दिल की बात कही। अब तुम्हें भी खेलने के लिए एक प्यारा दोस्त मिल जाएगा।'' कहने के साथ ही पापा ने पिल्ले को उठाकर कार में बिठा लिया। सलोनी ने एक पैकेट खोलकर उसे ब्रेड का एक टुकड़ा दिया, ''खा लो प्यारे टॉमी... आज से तुम मेरे पक्के दोस्त हो!''

सलोनी की गोद में टॉमी मजे से ब्रेड खाते हुए दुम हिलाने लगा। अब उसे अपने लिए नया घर, नया दोस्त और नया नाम जो मिल गया था!

*88/1395, बलदेव नगर*
*अम्बाला सिटी-134007 (हरियाणा)*

My Page

# Unreliable Gadgets

**Cadet Animesh Chugh**

When the time comes, will they go with us or will they just betray us at the end, deceiving our very own trust on them that they will come with us, all our life, will they?

The countless different features and colours that they show, make me think are they useful or will they just end up giving us nothing?

I like iPhone and want to buy it. But I'm afraid, if it breaks it will ultimately end up with nothing but a piece of plastic. It's better to invest money in something worthwhile other than gadgets.

I like Mercedes, but what if the brake fails and it end up falling in the canyon in front of me? Will the Mercedes go with me up to the heaven or will it be just a dumped piece in waste bin?

These gadgets cannot be trusted or cannot be used with a total relief. Their colourful appearance is as brittle as a piece of chalk. The more you write with it on black board, the more it wears out. You have to use them with utmost care. Therefore, I feel that —

Gadgets are useful
But not reliable!

*Rashtriya Indian Military College*
*Dehradun-248003 (Uttarakhand)*

खुद करके देखो

# पहले ही हाजिर है सही जवाब!

आइवर यूशिएल

गणना के पहले ही जवाब हाजिर हो जाए यही क्या कम आश्चर्य की बात है! ऊपर से अगर कोई यह कहे कि भई, संख्याएँ तुम बाद में सोचकर गुणा-भाग करते रहना, लो, उत्तर मैं तुम्हें पहले ही बता देता हूँ तो तुम शायद विश्वास न करो इस कथन पर।

वैसे, यह कोरी गप्प नहीं है, ऐसा हो सकता है। कैसे? तो लो, देखो स्वयं करके।

- सबसे पहले 50 से नीचे की कोई भी एक संख्या किसी कागज़ के टुकड़े पर लिख लो और इस कागज़ की पुड़िया बनाकर इसे अपने दोस्त की जेब में रखवा दो (मान लो यह संख्या है 33)।
- अबकी संख्या सोचने की बारी तुम्हारे दोस्त की है, पर शर्त में थोड़ा बदलाव है। उसे जो संख्या सोचनी है वह 100 और 50 के बीच की होनी चाहिए (मान लो वह अपने पास लिख लेता है 68, जिसके बारे में तुम्हें पता नहीं चलता)।
- इसके बाद तुमने जो संख्या पर्ची पर लिखकर दी है उसे तुम 99 से घटा दो और बची हुई संख्या (99-33=66) अपने दोस्त को बताते हुए उससे कहो कि वह अपने द्वारा सोची संख्या में इसे जोड़ दे (वह चुपचाप जोड़ लेता है 68 + 66= 134)।
- तुम्हारे दोस्त के पास अब जो संख्या है उसमें से उससे बाईं ओर का एक अंक काट देने को कहो और बाकी बची संख्या में इस अंक का योग करवा दो (34+1=35)।
- बस, अब तुम्हारे दोस्त को एक काम और करना रह गया। इस अंतिम संख्या को उसे अपने द्वारा पहले-पहले सोची संख्या से घटाना भर बाकी है (68-35=33)।

इसके बाद तो जैसे ही पर्ची खोलने पर तुम्हारे दोस्त को वहाँ पहले से ही 33 की संख्या नजर आएगी वह तुम्हारे बुद्धि-कौशल का लोहा मान जाएगा।

*सी-203, कृष्णा काउण्टी, रामपुर, नैनीताल, मिनी बाईपास, बरेली-243122 (उ.प्र.)*

**पुस्तक समीक्षा**

## गोरा-काला

दिखने में काले भी दिल के बहुत अच्छे हो सकते हैं। एक काले कौए ने वह कर दिखाया जो कबूतरों के दोस्त उस कबूतर के लिए नहीं कर पाए जो घायल हो गया था।

कहानी काफी रोचक है। एक सफेद कबूतर को बच्चों द्वारा फेंकी गई पत्थर से चोट लग जाती है। इससे पहले कि बच्चे और नुकसान पहुँचाएँ कौए बच्चों को भगा देते हैं। एक कौआ घायल कबूतर की सेवा करता है। जब कबूतर को होश आता है तो वह कौआ को देखकर घबड़ा जाता है। किंतु कौआ उसे बताता है कि उसी ने उसकी रक्षा की है। वह कौआ सिर्फ उस कबूतर का ही नहीं बल्कि सभी कबूतरों का दोस्त बन जाता है।

शाम्यकी के चित्र भी आकर्षक हैं। बच्चों को यह पुस्तक काफी पसंद आएगी।

**गोरा-काला**
*सैयद असद अली*
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
₹25.00

## फूलों से प्यार

कुल 25 कहानियों का संग्रह। लेखिका की मान्यता है कि बच्चों को वास्तविक जीवन से जुड़ी समस्याओं, घटनाओं पर आधारित कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। भूत-प्रेत, राक्षस, जादू-टोना, परी आदि आधारित कहानियाँ बच्चों को सही मानसिक खुराक नहीं दे सकतीं। प्रस्तुत संग्रह लेखिका का पहला बाल कहानी संग्रह है। वैसे, लेखिका विगत चार दशक से बाल-लेखन कर्म से जुड़ी हैं।

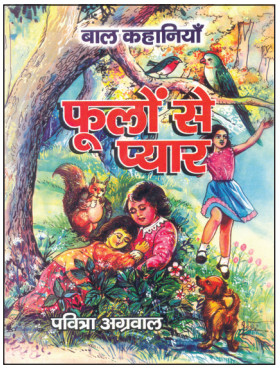


**फूलों से प्यार**
*पवित्रा अग्रवाल*
अयन प्रकाशन, नई दिल्ली
₹150.00

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date :. 20/21 Same Month
Date of Publication: 14 /12/2013

# नए प्रकाशन : पढ़ते जाएं, बढ़ते जाएं

## राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के प्रकाशन

नई दिल्ली
विश्व पुस्तक मेला
15 - 23 फरवरी 2014
प्रगति मैदान

**राष्ट्रीय पुस्तक न्यास**
**की चुनिंदा पुस्तकें**
**आदेश हेतु**
**ऑनलाइन भी उपलब्ध**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास
किताब क्लब के सदस्य बनें और
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के प्रकाशनों
पर 20 प्रतिशत की छूट पाएं

*अधिक जानकारी के लिए*
*कृपया संपर्क करें :*

**राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत**
**NATIONAL BOOK TRUST, INDIA**
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
**नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया,**
फेस-II, वसंत कुंज,
नई दिल्ली-110070
दूरभाष : 91-11-26707700
फैक्स : 91-11-26121883
ई-मेल : nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : http://www.nbtindia.gov.in

मुंबई : दूरभाष व फैक्स : 91-22-23720442
ई-मेल : wro.nbt@nic.in
बंगलुरु : दूरभाष व फैक्स : 91-80-26711994
ई-मेल : sro.nbt@nic.in
कोलकाता : दूरभाष व फैक्स : 91-33-22413899
ई-मेल : ero.nbt@nic.in

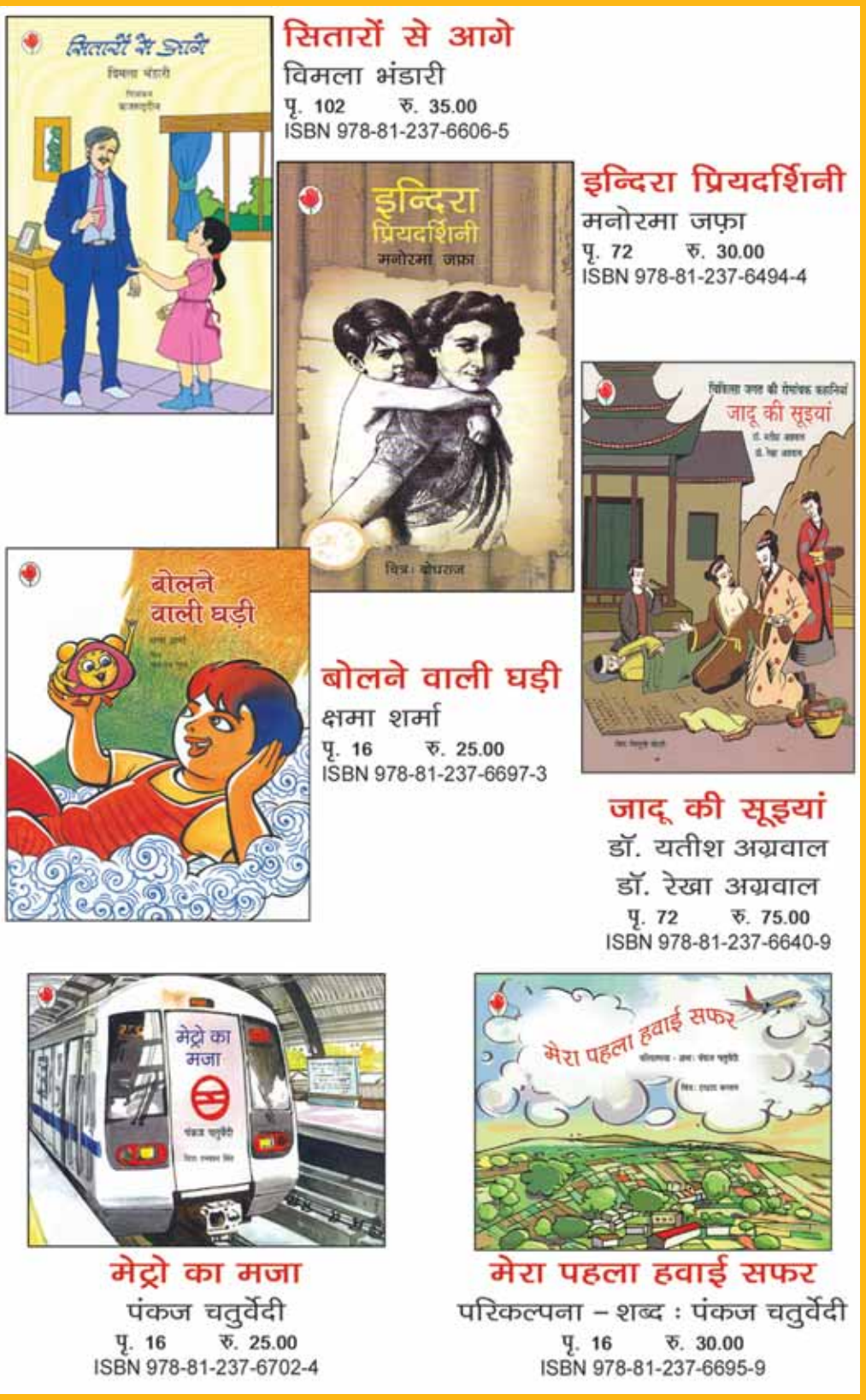


**www.nbtindia.gov.in ● facebook.com/nationalbooktrustindia**